छठा अध्याय

उपसंहार

छठा – अध्याय

उपसंहार

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् का साहित्य दो दृष्टियों से विशेष महत्व रखता है। एक तो इसमें हर विधा में जीवन सत्य पर बल दिया और दूसरा देश के उपेक्षित अँचलों की ओर उसकी दृष्टि गई। परिणामत: ग्रामीण जन–जीवन का चित्रण अनुभूति के साथ साहित्य में चित्रित होने लगा। देश का असली रुप ग्रामों मे दिखाई देता है। इसलिए कहा जाता है कि असली भारत देश ग्रामों में बसा हुआ है। आज साहित्य में अनुभव की, प्रामाणिकता की आवाज सुनाई देती है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास इसी का ही एक उदाहरण है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी उपन्यासकारों का ध्यान ग्रामजीवन की ओर आकर्षित हुआ। शहरी जीवन की एकरसता से उबकर उपन्यासकार ग्रामीण जीवन की ओर आकृष्ट हुए। गाँव संकल्पना, ग्रामीण जीवन, जीवन की समस्या, सरकारी विकास योजना, शोषण के विविध आयाम, स्वातंत्र्योत्तर काल में परिवर्तित ग्राम–जीवन आदि का यथार्थ रुप में चित्रण उपन्यासों में होने लगा। इसके साथ–साथ नए संबंध बोध, मूल्य विघटन, जीवन संघर्ष, पारिवारिक विघटन, राजनीतिक टकराव, सांप्रदायिकता और नारी की स्थिति आदि पर भी उपन्यासकारों ने प्रकाश डाला है। इसीकारण स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन इस विषय को शोध कार्य के रुप में मैंने चूना।

ग्राम का अर्थ 'बस्ती' अथवा जहाँ किसान खेतीहर, मजदूर रहते है, उसे 'ग्राम' कहते है। प्राचीन भारतीय संस्कृति की रक्षा ग्रामों में हो रही है लेकिन आज नागरीकरण, औद्योगीकरण, पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण ग्रामीण संस्कृति की जडे हिलने लगी हैं। उपन्यासकारों ने इसपर सोचा है। ग्राम जीवन की स्थिति में आज धीरे–धीरे सुधार लक्षित हो रहा है। इस विकास के साथ–साथ राजनीतिक, साप्रदायिक, भ्रष्टाचार और जातीयवाद जैसी

नई समस्याएँ पैदा हो रही है। पंचायतराज, पुलिस व्यवस्था, न्याय प्रणाली आदि के दर्शन आलोच्य उपन्यासों में होते है। विधवा नारी की स्थिति पर विशेष बल दिया है। ग्रामीण जन–जीवन की सभी समस्याओं पर उपन्यासकारों ने गहराई से सोचा है, ऐसा लगता है। 'गंगा मैया' और 'रतिनाथ की चाची' इसके उदाहरण है। प्रगति की ओर बढ़ा ग्राम भविष्यत में देश की प्रगति का एक प्रतिक बनेगा ऐसा लगता है। लेकिन साथ–ही–साथ अंधश्रध्दा, अशिक्षा जैसी खतरनाक रुकावटे अभी भी विकास में रोडे अटकाने का कार्य कर रही हैं। यह चेतावनी साहित्यकारों ने अपने साहित्य कृतियों में दी है।

इन आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विकास की प्रक्रिया में संघर्षरत ग्राम जीवन का चित्रण किया है। हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचंद, रेणु, नागार्जुन, रांगेय राघव, रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा, शिवप्रसाद सिंह, श्रीलाल शुक्ल, जगदीशचंद्र आदि जैसे उपन्यासकारों ने भारतीय ग्राम जीवन के जीवन पहलूओं पर विचार किया है। साथ–ही–साथ प्रगतिवादी, चेतित ग्राम का चित्रण चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। उनके उपन्यास ग्राम जीवन की तस्वीर लगते है। जाति पंचायत से लेकर पंचायतराज तक का परिवर्तित ग्राम जीवन उपन्यासों में चित्रित हुआ है। 'सती मैया का चौरा', 'राजदरबारी', 'आधा गांव', 'धरती धन अपना', 'रंगभूमि', 'गोदान' आदि जैसे अनेक उपन्यास ग्राम जीवन को यथार्थ रुप में चित्रित करने में सक्षम लगते हैं। इसके साथ प्रगतिवादी चेतना का स्वर भी इसमें सुनाई देता है। ये सभी उपन्यास अनुभूति और संवेदना के आधार पर लिखे है ऐसा लगता है। स्वातंत्र्यूपर्व ग्राम जीवन और स्वातंत्र्योत्तर ग्राम जीवन का भेद इन उपन्यासों में स्पष्ट हुआ है। 'मैला आंचल', 'बाबा बटेसरनाथ', 'रंगभूमि', 'पानी के प्राचीर' आदि उपन्यास उसके उदाहरण है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन इस लघु शोध प्रबंध में 'बाबा बटेसरनाथ', 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', 'गंगा मैया', 'मैला आँचल' आदि उपन्यासों को लिया है। ग्रामों में स्थित लोकगीत, लोककथा, उत्सव–पर्व, संस्कार, देवी–देवता, प्रथा, रुढ़ि, अंधविश्वास, जातीयता, शोषण के विविध आयाम और नारी की स्थिति आदि सभी

बातों को ग्राम जीवन के अंतर्गत समाकलित किया है। अज्ञानी ग्रामवासी रुढ़ि–परंपरा में अटके हैं लेकिन तिज–त्यौहार उत्सव पर्व धूमधाम से मनाते है। आर्थिक स्थिति भयावह होने पर भी देवी–देवताओं के प्रति वे सजग लगते है। इसका एकमात्र कारण अंधविश्वास है। ग्रामवासी जाति, कुल, गोत्र की रक्षा करना चाहते है। ग्रामजीवन में समूह भावना दिखाई देती है। लेकिन चुनावी राजनीति के कारण ग्राम जीवन में दरारें पड गई है। ग्रामवासियों का जीवन शोषण की कहानी है। सभी उपन्यासकारों ने इसपर गहराई से सोचा है। 'रतिनाथ की चाची', 'गंगा मैया', 'बलचनमा' 'आधा गांव' आदि उपन्यास इसके उदाहरण है।

जमींदारों की मनमानी, किसानों का संगठन, नारी की स्थिति, विधवा नारी का शापित जीवन, भौतिक सुविधाओं का अभाव, शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक भ्रष्टाचार की भयावहता, पुलिस अत्याचार, स्वास्थ्य सुविधा का अभाव आदि पर भी उपन्यासकारों ने प्रकाश डाला है। बाबा बटेसरनाथ में स्वातंत्र्य आंदोलन का चित्रण एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिससे ग्रामवासियों के मन में आजादी का आंदोलन के प्रति जो भाव था वह स्पष्ट होता है। तो 'गंगा मैया' में विधवा का पुनर्विवाह रचाकर उपन्यासकार ने सामाजिक मान्यताओं को तहस–नहस कर दिया है। 'मैला आँचल', शोषित ग्रामजीवन की श्रेष्ठ साहित्य कृति है। इन उपन्यासों में जैकिसुन, बलचनमा, महरु, कालीचरण आदि जैसे पात्र उपन्यासकारों के विचारों के वाहक लगते है। यहाँ स्पष्ट है अब ग्राम जीवन में धीरे–धीरे परिवर्तन हो रहा है। अपनी प्रथाओं को ठुकराकर नई व्यवस्था का स्वीकार ग्राम जीवन में हो रहा है। लोकगीत, लोककथा के माध्यम से ग्राम संस्कृति स्पष्ट होती है। ग्रामीण बोली भाषा, मुहावरें, लोकोत्तियाँ, कहावतों का आधार लेकर ग्राम बोली को साहित्यिक भाषा के रुप में प्रतिष्ठित किया है, हो सकता है उसमें अशुध्दता, उपमा का अभाव, अलंकार न हो लेकिन उसमें भाव श्रेष्ठ है। ग्रामजीवन में सामाजक, धर्मिक और सांस्कृतिक संस्कार के अवसरपर गीत गाए जाते है। 'गंगा मैया' में गोपी के विवाह में गीत गानेवाली ग्राम युवतियाँ तो 'बलचनमा' में अपनी विवाह में गीत गानेवाला बलचनमा इसका उदाहरण है।

भारतीय जन–जीवन में धर्म का स्थान महत्वपूर्ण है। ग्राम जीवन इसके लिए अपवाद नहीं है। धर्म का आधार लेकर अंधविश्वास को बढ़ावा दिया जा रहा है। यही धर्म–विश्वास शोषण का एक आयाम बना है। इतना ही नहीं अनैतिकता, नारी शोषण और भ्रष्टाचार का केंद्र बना है। फणीश्वरनाथ रेणु ने 'मैला आंचल' के माध्यम से इसपर प्रहार किया है। पद, सत्ता, संपत्ति, सेवा की प्राप्ति के लिए मठ में चलनेवाले क्रिया–कर्म और षडयंत्र पर प्रकाश डालने का कार्य रेणु ने किया है। रामदास इसका प्रतिक है। धर्म के कारण रुढ़ि–परंपरा और अंधविश्वास को बढ़ावा मिल रहा है, जिसके कारण ग्राम जीवन विनाश की कगार पर खड़ा है इसपर भी उपन्यासकारों ने सोचा है तथा शिक्षा प्रसार अनिवार्य शिक्षा आदि का पुरस्कार किया। इसके दर्शन आलोच्य उपन्यासों में होते है।

आलोच्य उपन्यासों के अध्ययन के उपरांत हम यह कह सकते है कि इन उपन्यासों का केंद्र ग्रामजीवन है। ग्रामजीवन पर ध्यान केंद्रित करके ग्रामजीवन का सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर चित्रांकित किया है। ग्रामजीवन का समग्र जीवन यथार्थ शब्दों में स्पष्ट करने में उपन्यासकार सफल रहे है ऐसा लगता है। अज्ञान के कारण नई–नई समस्याएँ पैदा हो रही है। राजनीतिक व्यक्ति और धार्मिक व्यक्ति इसे बढ़ावा दे रहे हे। राजनीतिक व्यक्ति सत्ता के बल पर, जमींदार धन के बल पर और धार्मिक व्यक्ति धर्म के आधारपर ग्रामवासियों का शोषण कर रहे है ऐसा यहाँ लक्षित होता है। आज धीरे–धीरे शिक्षा व्यवस्था, राजनीतिक सुधार, संविधान की सहायता, अधिकारों की प्राप्ति, सरकारी विकास योजना आदि के कारण शोषण की की मात्रा कम हो रही है। किसान संगठन बनाकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सक्रिय बने है, तो दूसरी ओर सहकारी संस्था और बैंक की सहायता से कर्ज सुविधा उपलब्ध होने के कारण ग्रामवासी जमींदारों द्वारा होनेवालो शोषण से मुक्ति की आशा कर रहे हैं, जिसके दर्शन इन उपन्यासों में होते है।

हिन्दी उपन्यासों में ग्रामीण जन–जीवन के चित्रण के साथ–साथ ग्रामजीवन में पनपनेवाली नई चेतना एवं प्रगतिवादी विचारधारा को भी रेखांकित किया है। अन्याय, अत्याचार,

शोषण, कुप्रथा आदि के खिलाफ संघर्ष करनेवाले क्रांतिकारी पात्र यहाँ दिखाई देते है। जो उपन्यासकारों के विचारों के वाहक लगते है। समाजसेवी संस्था तथा समाजसेवी व्यक्तियों के कार्य के परिणाम स्वरुप यह प्रगतिवादी विचारधारा बल पकड़ती जा रही है। नागार्जुन, रेणु, भैरवप्रसाद गुप्त, रांगेय राघव, रामदरश मिश्र, जगदीश चंद्र आदि जैसे कई उपन्यासकारों ने परिवर्तित ग्राम–जीवन पर प्रकाश डाला है। 'बलचनमा' का बलचनमा, किसान मजदूरों का संगठन बनाकर 'किसान सभा' की स्थापना करके जमींदारों के खिलाफ संघर्ष करता है। 'रतिनाथ की चाची' का ताराचरण शुभंकरपुर गाँव में जातीय भेदाभेद मिटाकर एकता की स्थापना करता है। एकता के बल पर गाँव का विकास करनेवाला वह एक आदर्श पात्र यहाँ लक्षित होता है। भैरवप्रसाद गुप्तजी के 'गंगा मैया' का मटरू झूठी प्रतिष्ठा, कुल मर्यादा एवं रुढ़ि–परंपरा को ठुकराकर विधवा भाभी का देवर के साथ विवाह रचाकर प्राचीन परंपरा को ठेंस पहुँचाता है। पुनर्विवाह का प्रसार एवं विधवा विवाह विधवा शोषण पर उपाय लगता है। 'बाबा बटेसरनाथ' में चित्रित असहयोग आंदोलन भी इसी का उदाहरण है। जैकिसुन ग्राम चेतना को पुनर्जिवित करनेवाला एक पात्र लगता है। 'मैला आँचल' का कालिचरण संथालों का संगठन बनाकर जमींदारों की मनमानी रोकता है, धर्मांध व्यक्ति का पर्दाफाश करता है। यहाँ स्पष्ट है प्रसार माध्यमों का सहयोग, शिक्षा प्रसार आदि के कारण अग धीरे धीरे ग्राम जीवन में जागृति हो रही है। अपनी अस्मिता, अपने अधिकार की रक्षा ग्रामवासी कर रहे है। ग्रामवासियों के विकास में सरकार के साथ–साथ समाजसेवी संस्था, सेवाभावी व्यक्ति और ग्रामवासियों का सहयोग अनिवार्य और आवश्यक है। जब तक ग्राम संपन्न नहीं होते तब तक 'सुजलाम्–सुफलाम्–भारत' एक सपना ही रहे ऐसा लगता है।